आत्म दर्शन

प्रदीप कांति सरकार
क्षेत्रीय केन्द्र, गुवाहाटी

हम ईश्वर को बाहर ही बाहर ढूँढते हैं। लेकिन ईश्वर हमारे अंदर ही विराजमान है। अपने आपको जानने, समझने में ही ईश्धर की उपलब्धि हो सकती है। इसके लिए जरूरत है सम्यक ज्ञान की। जिसमें आध्यात्मिकता को सबसे ऊपर रखा जाता है। उसके बाद किसी भी विषय को हमें दिव्य दृष्टि से देखना चाहिए, जिसे दर्शन कहा जाता है। फिर वैज्ञानिक दृष्टि से उसका अवलोकन करना चाहिए।

अगर हम यह सब कर सकते हैं तब हमें विशेष ज्ञान प्राप्त होगा और हमारे जीवन में विशेष प्रज्ञा की रोशनी आएगी। जैसे– हम ही यह विश्व हैं और इस विश्व के रंगमंच भी। सब कुछ हम में ही उत्पन्न होता है, हम में ही होता है लीन। अगर कोई अपने आपसे प्रश्न करता है– "मैं कौन हूँ?", कहाँ से आया हूँ?, क्या है मेरा आदि? तब इस प्रश्न का एक ही उत्तर होगा– "मैं हूँ सीमाहीन, अनन्त, मैं हूँ ॐ "

हमारे अंदर इतनी शक्ति है जो हम कह सकते हैं। इस दुनिया की सबसे बड़ी लाइब्रेरी है हमारा हृदय। अगर किसी के अन्दर अपने-आप की सुरक्षा नहीं है तो बाहर से सशस्त्र सिक्योरिटी गार्ड से भी कुछ नहीं होगा।

हम जानते हैं कि वास्तव के साथ यह सब जोड़ना मुश्किल है, लेकिन हम कोशिश कर सकते हैं। हम जानते हैं कि वास्तव में भावनाओं का कोई स्थान नहीं है। लेकिन भावनाओं को छोड़कर जीवन का कोई अर्थ भी नहीं होता है। थोड़ी-सी भावना और ममता से एक प्यार का सागर बनता है। हमारे साथ कोई गलत होता है तो हम दूसरों के ऊपर दोषारोपण करते हैं। लेकिन सबसे पहले अपने आप पर विचार करना चाहिए।

हमको किसी भी बात पर उत्तेजित नहीं होना चाहिए और किसी की भी गैर तरीके से आलोचना नहीं करनी चाहिए। इससे हमारा आत्मबल कम हो जाता है। किसी भी समस्या को सुलझाने के लिए युद्ध या वाक्-विवाद की जरूरत नहीं होती। इसलिए हमें सब कुछ शांति से करना चाहिए, समझना चाहिए और इसी से हमें विशेष ज्ञान प्राप्त होगा, जिसे हम ईश्वर की उपलब्धि कह सकते हैं।

*****